लोककवि फौजी मेहर सिंह के काव्य में देशभक्ति - भावना

राजेश कुमार,
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।

फौजी मेहर सिंह का जीवन –परिचय

युद्ध और संगीत, तलवार और कलम इन को एक दूसरे के विपरीत माना जाता है परंतु फौजी मेहर सिंह इन दोनों विपरीत विधाओं के धनी थे। मेहर सिंह का जन्म 1918 ईस्वी में माना जाता है, इनका जन्म दहिया गोत्री जाट परिवार में हुआ था। उन्हें गाने बजाने का शौक बाल्यकाल से ही था। जाट परिवारों में उस समय गाना बजाना अच्छा नहीं माना जाता था। उनका गाना छुड़वाने के लिए उनके पिताजी ने उनकी शादी प्रेमकौर से करवा दी थी। सन 1936 में उन्हें उनके पिताजी ने बरेली जाट रेजीमेंट में भर्ती करवा दिया था, परंतु फौज में भी उनके गाने बजाने की आदत नहीं छूटी।

फौजी मेहर सिंह की आवाज बहुत मधुर और सुरीली थी । उन्होंने अपने पिताजी को वचन दे दिया था कि वह स्टेज पर चढ़कर सांग नहीं करेंगे, उन्होंने जीवन भर इस वचन को निभाया। उनकी रागनियों में सामाजिक दशा, सामाजिक बुराइयों, धार्मिकता, संस्कृति, देशभक्ति एवं फौजी जीवन का पुट मिलता है ।

फौजी मेहर सिंह के लोककाव्य में देशभक्ति –भावना

मेहर सिंह पहले अग्रेंजो की फौज में थे,उन्होंने अंग्रेजों की तरफ से ही द्वितीय विश्वयुद्ध में भाग लिया था। बाद में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के आह्वान पर वे आजाद हिंद फौज में भर्ती हो गए थे।मेहर सिंह ने सांग

सुभाष चन्द्र बोस तथा असंख्य मुक्तक रागनियों के माध्यम से अपनी देशभक्ति की भावना को अभिव्यक्ति दी है । उन्होंने इस सॉन्ग में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की देशभक्ति के बारे में बारे में बताया है । नेताजी का एकमात्र लक्ष्य भारत को आजाद करवाना था। देश की आजादी के लिए उन्होंने अपनी सारी सुख सुविधाओं को छोड़कर के पूरा जीवन देश की सेवा में लगाया। उस किस्से में सुभाष बाबू अपनी भाभी से कहता है कि मैं कल ही दिल्ली जाऊंगा तथा देश को आजाद करवाउँगा–

देश गुरु गांधी के धोरे दिल्ली जांगां तङकै।
भारत देश गुलाम म्हारा आजाद करूंगा लङकै।।

नेता जी एक कुशल सेनानायक एवं एक कुशल प्रशासक थे।देश को आजाद करवाने के लिए उन्होंने आजाद हिंद फौज की स्थापना की थी।

जो कहती थी भारत माता, इब वाहे कार करूँ।
आई एन ए तैयार करूँ कलकत्ते ते लिकङ कै।।

नेताजी भारत माता के एक सच्चे सपूत थे।वे अंग्रेजों के अन्याय और अत्याचार को सहन नहीं कर सकते थे।विपरीत परिस्थितियों में भी वे अदम्य साहस के साथ कार्य करते रहे।उन्होंने देश को आजाद करवाने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी ।

कटण मरण तै शाल डरा करैं,शेर भरा करैं चाह मे।
भरा खुशी मे बोस जणु बनडे का बाबू ब्याह में।
भरा खुशी में बोस जणु गर्मी धूप सर्द कुछ ना।
मर्दां खातिर बर्छी भाले तेगा सेल करदे कुछ ना।
सारा गात छणँया गोली तै फेर भी कहँ दर्द कुछना।
जो गादङ की धमकी तै डरज्या वो बब्बर शेर मर्द कुछ ना।।

फौजी मेहर सिंह ने अपनी रागनियों के माध्यम से देश वासियों को प्रेरित किया है कि हमें देश की आजादी के लिए संघर्ष करना चाहिए।हमें अपने देश के उपर प्राणों को न्यौछावर करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। हमारा सिर भले ही कट जाए, लेकिन देश को हमेशा उपर रखना चाहिए। कवि देश के लिए आत्मबलिदान की प्रेरणा देते हुए कहते हैं–

रैफल तोप गोली कै आगे खङा हो ज्यागाँ अङ कै।
चाहे बेशक ते ज्यान चली जा ना शीश समझता धङ पै।

कवि ने एक और रचना में बताया है–

देश के उपर मरया करैं शूरवीर बलवान
मुल्क के उपर जान झोंक दै शीश काट कै कर दें दान।

कवि कहते है कि मांगने से हमें आजादी नहीं मिलेगी। इसके लिए हमें सभी सुख–सुविधा छोड़कर संघर्ष करना पङेगा–

यो भारत पङा सोव सै तनै जागणा होगा
मात–पिता और कुटुम्ब कबिला घर बार त्यागणा होगा।
प्यारा हिंदुस्तान छोड़ कै बाहर भागणा होगा
तेरे बिना इस खून की होली खेल फागण होगा।
मांगें त ना राज मिलै तनै करणी पङे लङाई।।

निष्कर्ष

हम देखते है कि लोकवि फौजी मेहर सिंह ने आजाद हिन्द फौज में रहकर आजादी कि लड़ाई लड़ी थी तथा वे उसी लड़ाई में शहीद भी हो गए थे ।उन्होंने अपने लोककाव्य के माध्यम से अंग्रेजों के अन्याय का बखूबी वर्णन किया है ।उन्होंने नेताजी सुभाष चंद्र बोस और अन्य देशभक्तों के बलिदान का भी वर्णन किया है ।उन्होंने देश के नौजवानो को देश के ऊपर सर्वस्व न्योछावर करने के लिए भी प्रेरित किया है ।आज भी मेहर सिंह की रागनियों के माध्यम से युवा पीढ़ी प्रेरणा प्राप्त करती है ।फौज मे भी इनकी रागनियो को बड़े चाव से सुना जाता है ।अतः हम कह सकते है कि फौजी मेहर सिंह के लोक काव्य ने हरयाणवी जनमानस मे राष्ट्रीय चेतना का भरपूर प्रचार –प्रसार किया है ।